कागज़ की नाव

बाल कविताएं

संतोष गर्ग

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कागज़ की नाव

बाल कविताऐं

संतोष गर्ग

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-056-8"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **संतोष गर्ग**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

रेखा चित्र - **जयति सुराना**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

KAGAZ KI NAO BY SANTOSH GARG

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

१.

भारत देश हमारा है।
हमें जान से प्यारा है।।
इसकी रक्षा करेंगे हम।
नहीं किसी से डरेंगे हम।।

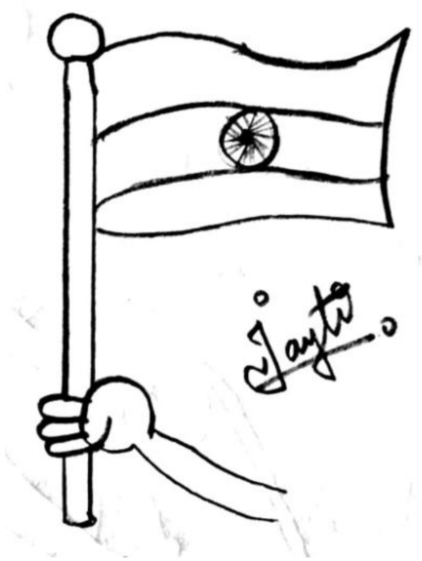

२.

कृष्ण-कन्हैया काला-काला।

कितना प्यारा वंशी वाला।।

दूध-दही-माखन को खाता।

मीठे-मीठे गीत सुनाता।।

३.

हँसो और हँसाओ बच्चो।

कभी नहीं शरमाओ बच्चो।।

सबको गले लगाओ बच्चो।

दुःख से छुट्टी पाओ बच्चो।।

४.

मुझे मार ना मेरी माता।

बेटी हूँ मैं तेरी माता।।

पढ़-लिख कर मैं काम करूँगी।

देश का ऊंचा नाम करूंगी।।

५.

हँसते हैं-मुस्काते हैं, हरे भरे ये पेड़।
हर मन को लुभाते हैं, हरे भरे ये पेड़।।
फल-फूल ले आते हैं, हरे भरे ये पेड़।
अपना प्यार लुटाते हैं, हरे भरे ये पेड़।।

६.

सूरज के आने से पहले
दादी आ कर मुझे जगाए ।
उठो! प्यारा बेटा! कहकर
राम-राम कह मुझे हिलाए।।
जल्दी से उठ जाता हूँ
आलस दूर भगाता हूँ।
मात-पिता, दादा-दादी के,
चरणीं शीश झुकाता हूँ।।

७.

सैर कर बहुत जरूरी।

इसके बिन हर बात अधूरी।।

मोटा पेट हो जाता है।

कई बीमारी लाता है।।

८.

मान्या जब भी होती खाली।
आसन मार बजाती ताली।।
छोटे-छोटे हाथ देखकर।
खुश हो जाता बाग का माली।।

६.

मदद सभी की करना तुम।
कभी न पीछे रहना तुम।।
रम्या सबका करती काम।
उसको मिलते कई ईनाम।।

१०.

हरी सब्जियाँ खाती हूँ।
कभी न नाक चढ़ाती हूँ।।
घीया, तोरी, टिंडा, पेठा।
देख के मैं मुस्काती हूँ।।
चावल, छोले, दाल, दही तो।
बड़े मजे से खाती हूँ।।

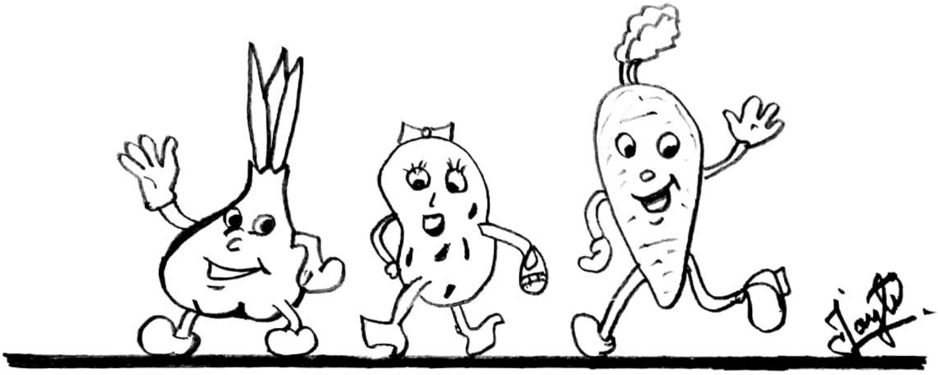

११.

पैसा सबसे बड़ी सौगात।
पैसे से बनती सब बात।।
चाहते हो जो इसको पाना।
थोड़ा-थोड़ा रोज बचाना।।
मम्मी-पापा के संग जाकर।
माटी का गुल्लक ले आना।।
जो भी दादू पैसे देंगे।
जल्दी से फिर उसमें पाना।।

१२.

नानी-नानी जल्दी आना।
चिजलिंग और केक भी लाना।।
सपनों की परियों के जैसी।
मेरी एक फ्राक बनाना।।

१३.

प्रिशा मेरी प्यारी बहना।

उसके कितने सुंदर नैना।।

नाच-नाच कर मुझे दिखाए।

'दीदी-दीदी' रोज बुलाए।।

१४.

मेरा जन्मदिन आएगा

घर में खुशियाँ लाएगा।

नानू-नानी आएँगे

खूब खिलौने लाएँगे।।

झट से हो जाऊँ मैं तैयार

दोस्त लाएँगे उपहार।

टाफी-केक मंगाएँगे

मिल बाँट के खाएँगे।।

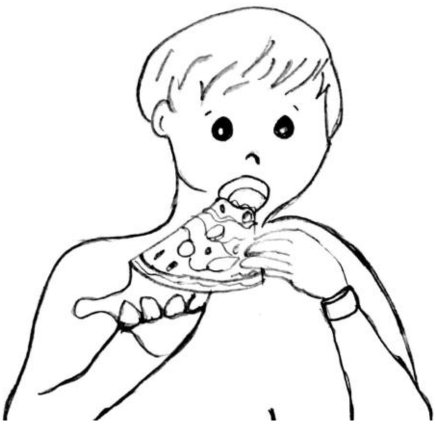

१५.

मेरा घर है इतना सुंदर।
लगता जैसे कोई मंदिर।।
छोटा सा है एक बगीचा।
प्रेम-प्यार के जल से सींचा।।

१६.

पौधे खूब लगाना बच्चो।
कुछ तो पेड़ उगाना बच्चो।।
ठंडी-ठंडी छाया देंगे।
मीठे फल तुम खाना बच्चो।।

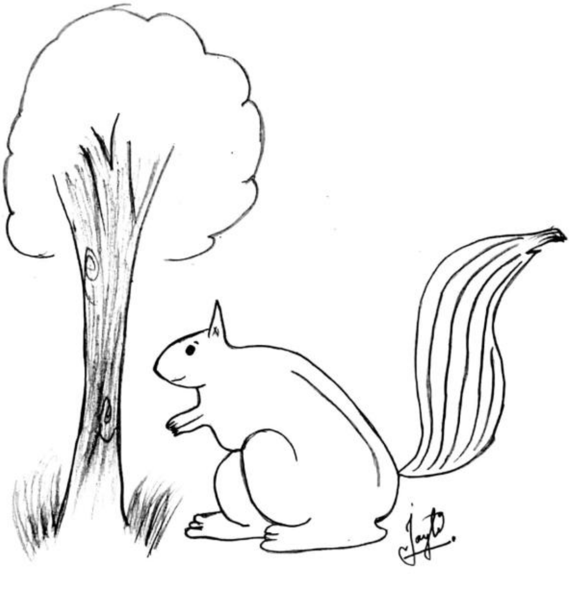

१७.

गुरू जी मेरे कितने अच्छे।

बोल-बोलते मीठे सच्चे।।

सब बच्चों का रखते ध्यान।

नेक बनो तुम देते ज्ञान।।

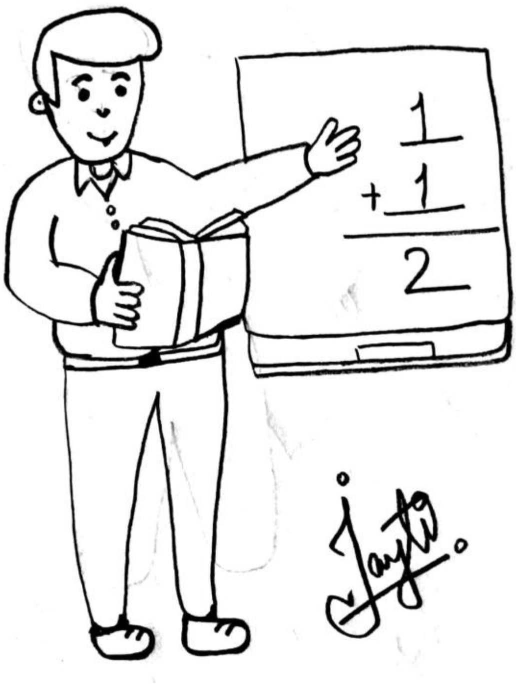

१८.

बच्चो देश की खातिर जीना।
चलना चौड़ा करके सीना।।
तिरंगे को नहीं दाग लगाना।
भारत की तुम लाज बचाना।।

१६.

वर्षा आई-वर्षा आई
गर्मी से है छुट्टी पाई ।

वर्षा में नहाएँगे
कुछ तो जल बचाएँगे।।

कागज की बनाकर कश्ती
अपना जहाज चलाएँगे।

इन्द्रधनुषी रंग खिलेंगें
मेंढ़क खूब टर्राएँगे।।

मम्मी के हाथों की चाय
गर्म पकौड़ें खाएँगे।।

२०.

मेहनत करके खाओ भाई।
कभी न जी चुराओ भाई।।

मांगने वाले रहते भूखे।
बोल बोलते सच्चे झूठे।।

मांग कर चुपड़ी न खाओ।
चाहे भूखे ही सो जाओ।।

मांग सभी को नीचा करती।
इज्जत खातिर दुनिया मरती।

२१.

कितनी धुंध, कितनी सर्दी
सूर्य ने पहनी, धुंध की वर्दी।
पक्षी देख-देख के हारे
कब सूर्य ये वर्दी उतारे।।

कब आएगी धूप की रानी
देगी हमको दाना पानी।
पेट में चूहे कूद रहे हैं
ठंड से आँखें मूँद रहे हैं।।

देख-देख के सब थे हारे
कब सूर्य यह वर्दी उतारे।
कोयल रानी आगे आई,
फोन उठा कर वह मुस्काई।।

नमस्कार-नमस्कार
सूर्य देव नमस्कार।
दर्शन दो, दर्शन दो
नन्हें बालक करते याद।।

आया-आया कोयल रानी,
तेरी कितनी मधुर है वाणी।
तुमने मनको लिया जीता
जल्दी सुना दो मीठा गीत।।

सुनकर सूर्य दौड़ा आया
जल्दी से वर्दी को हटाया।
हा-हा-हा-हा धूप खिली है,
ठंड से सबको राह मिली है।।

पेट भर कर सब ने खाया
खुशियों का विगुल बजाया।
खा-पीकर फिर छेड़ा नाद
धन्यवाद- धन्यवाद
कोयल मैडम धन्यवाद।।

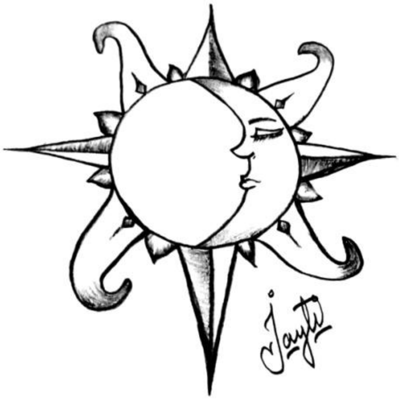

२२.

आओ मिल खत्म करें,
नशे की बीमारी को।
समझ न पाए जो,
देश की लाचारी को।।

दीमक की भाँति,
प्रतिभा को चाट रहा।
नशे का व्यापार,
रिश्तों को बाँट रहा।।

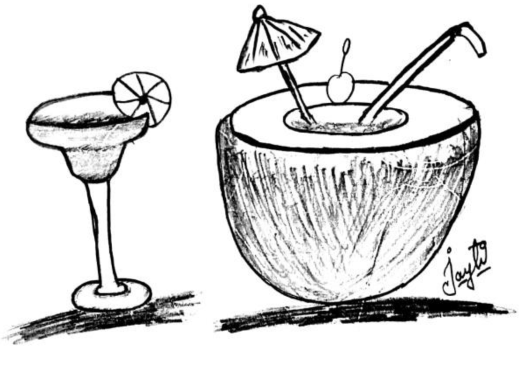

२३.

भारत की इस पुण्य धरा को,
मिलकर शीश झुकाते हैं।
आओ नई सोच को लेकर
कुछ तो कर दिखलाते हैं।।

मेरे देश के वीर बहादुर
खेलें अपनी जान पे
सरहदों की रक्षा करते
मिटे देश की आन पे

हम भी दुश्मन को घुड़की दे
नाकों चने चबाते हैं।
भारत की इस पुण्य धरा को
मिलकर शीश झुकाते हैं।।

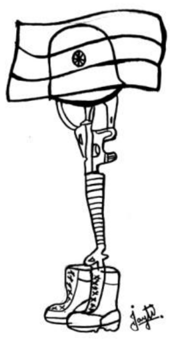

२४.

अलार्म ने घंटी है बजाई।
मीठे सपनों से मैं जगाई।।

दाईं ओर फिर करवट लेकर
फिर से ओढ़ी थी रजाई।

आलस ने आ मुझको घेरा।
निंदिया ने फिर किया बसेरा।।

ऊँचा स्वर पापा का सुनकर।
बैंड बजा था झटपट मेरा।।

आखिर ऐसी शामत आई।
मम्मी ने इक चपत लगाई।।

रह गया सारा काम अधूरा।
होम वर्क भी था न पूरा।।

अगर अलार्म से उठ जाती।
टीचर मुझको न धमकाती।।

अच्छी मैंने शिक्षा पाई।
झट से छोडूं अब रजाई।।

२५.

नकली रंगों से
कुदरत के रंग अच्छे
प्रेम की भाषा
हर कोई समझे
समझें नाजुक बच्चे।

हरे रंग के बाग बगीचे
फूल हैं रंग-रंगीले
जामुनी, बैंगनी, लाल, गुलाबी
कुछ हैं नीले-पीले
चंदन सी खुश्बू से महकें
बच्चे मन के सच्चे।

कल-कल करती नदिया कहती
बच्चो, कभी न रूकना
यदि हो चाहते सागर होना
सबके आगे झुकना।

बस मेरा संदेश यही
सुनो बादामी लच्छे,
नकली रंगों से
कुदरत के रंग अच्छे।।

२६.

मैं, मम्मी-पापा और छाया।
सबके मन में ख्याल आया।।

दादी माँ को पढ़ने बैठाएं।
साक्षरता अभियान चलायें।।

जब दादी को बात बताई।
तब तो ऐसी शामत आई।।

दादी माँ ने हमको डाँटा।
गाल पे मेरे मारा चाँटा।।

कहती, ‘‘तुमको शर्म न आई।
क्यों करते हो जग हँसाई।।

बच्चों अब मैं क्या पढूंगी।
पाठ को कैसे याद करूँगी’’।।

दादी पढ़ना बहुत जरूरी।
इसके बिना हर बात अधूरी।।

नैट का अब समय है आया।
तुमने अब तक कुछ न पाया।।

सोच-सोच जब दादी हारी।
बात समझ तब आई सारी।।

व्हाट्सऐप पे चैट करूंगी।
सी ए टी मैं कैट पढ़ूँगी।।

मैं मम्मी पापा और छाया।
सबका मन अति हर्षाया।।

पापा कलम दबात लाए।
दादी माँ स्कूल अब जाए।।

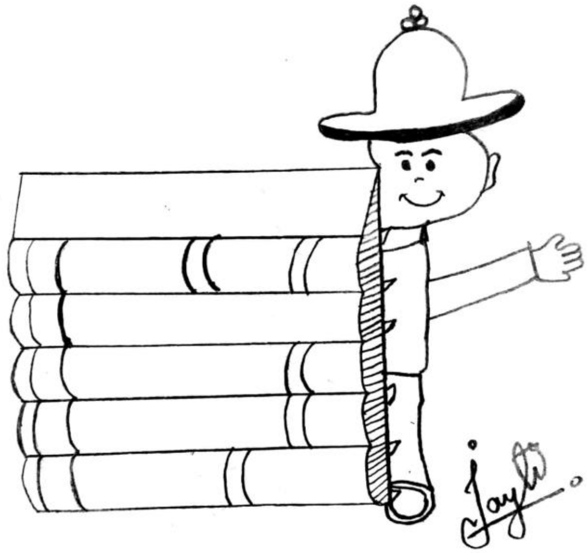

२७.

राखी का त्यौहार है आया
स्नेह, रक्षा का थाल सजाया।

सज-सँवर कर बैठी बहना
उसके आनंद का क्या कहना।

जब चाँद सा भैया आया
बहना का मन अति हर्षाया।

बाँध के प्रेम प्यार का धागा
बहना ने फिर गीत गाया।

भैया मेरे, राखी के बंधन को निभाना
भैया मेरे, छोटी बहन को न भुलाना।।

T.E.A.M

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - **सन्तोष गर्ग** (हिसार हरियाणा से)

जन्म- १२ नवम्बर १९६० बुड़लाड़ा, जिला मानसा (भटिंडा)

शिक्षा- १०+२, फैशन डिजाईनिंग कोर्स

कार्यक्षेत्र- हिंदी, पंजाबी दोनों भाषाओं में स्वतंत्र लेखन व समाज सेवा।

विधा- गजल, गीत, कविता, कहानी, लघुकथा, हाइकू, चौका, आदि।

पता - १२६, एचआई जी, सैक्टर-७१, मोहाली, पंजाब (चण्डीगढ़)

संपर्क नं. - ६३५६५३२८३८, ७९८६४१२६३०

ई मेल- santoshgarg1211@gmail-com

प्रकाशन - कुल १२ पुस्तकें प्रकाशित। 'दिल मुट्ठी में', (काव्य संग्रह) 'सूख गए नैनन के आँसू' (काव्य संग्रह) व 'मनांजलि' (डायरी के पन्ने) हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित। 'अपनी-अपनी सोच' (लघु कथा संग्रह), 'दुनिया गोल-मटोल' (बाल-काव्य संग्रह), 'नानी, निक्की और कुंभ'(बाल उपन्यास),'आध्यात्मिक चिंतनः- 'पंचामृत','सनातन-वार्ता', 'मानस मोती', 'सहस्त्र मानक', 'यात्रा गुरू के गाँव की' 'लफ्जां दे बनजारे' (सांझा पंजाबी काव्य संग्रह) चण्डीगढ़ दूरदर्शन, आकाशवाणी रोहतक व हिसार से निरन्तर काव्य पाठ, 'खुशहाली की ओर' लिखी लघु फिल्म का हरियाणा सिंचाई विभाग द्वारा पूरे उत्तर भारत में प्रसारण।

सम्मान - अग्रोहा विकास ट्रस्ट(अग्रोहा), अखिल भारतीय साहित्य परिषद (शाखा हिसार), रविकान्त मेमोरियल समिति (श्रीगंगानगर), नारायणी साहित्य अकादमी (पटियाला), राष्ट्रीय कवि संगम, पंजाब द्वारा सारस्वत सम्मान, रीडर्स एंड राईटर्स सोसाईटी ऑफ इंडिया चंडीगढ़ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'वूमैन एम्पावरमैंट अवार्ड२०१७','लघुकथा स्वर्ण सम्मान' हरियाणा प्रादेशिक लघुकथा मंच-गुरूग्राम, 'कायाकल्प साहित्यश्री सम्मान-२०१८' साहित्य-कला फाउण्डेशन नोएडा, जैमिनी अकादमी पानीपत द्वारा 'आचार्य' की मानद उपाधि, बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन,पटना द्वारा महान कवयित्री महादेवी वर्मा की जयंती पर 'साहित्य सम्मेलन शताब्दी सम्मान'-२०१९ व अन्य अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-056-8
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध